मध्य प्रदेश विधान सभा में 'संसदीय उत्कृष्टता सम्मान' प्रदान करने हेतु आयोजित कार्यक्रम में माननीय लोक सभा अध्यक्ष जी का संबोधन

विधान सभा के माननीय अध्यक्ष, श्री गिरीश गौतम जी;

मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री, श्री शिवराज सिंह चौहान जी ;

माननीय नेता प्रतिपक्ष, श्री कमल नाथ जी;

संसदीय उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त करने वाले विशिष्टजन;

मध्य प्रदेश विधान मंडल के माननीय सदस्यगण; उपस्थित देवियो और सज्जनो!

- मुझे आज मध्य प्रदेश विधान सभा में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस विधान सभा का एक गौरवपूर्ण संसदीय इतिहास रहा है। यहां की उच्च संसदीय परंपराओं ने हमेशा देश और राज्य को एक नई दिशा दी है।

- आज मैं लोकतंत्र को सशक्त करने के लिए अलग अलग क्षेत्रों में काम करने वाले उन सभी महानुभावों को बहुत बहुत बधाई देता हूँ, शुभकामनाएं देता हूँ जिन्हें 'संसदीय उत्कृष्टता सम्मान' से सम्मानित किया गया है।

- मैं आज इस अवसर पर राज्य के उन सभी पूर्व विधान सभा अध्यक्षों और पूर्व नेताओं का स्मरण करता हूँ जिनके योगदान से हमारा लोकतंत्र सशक्त हुआ है और जिनके प्रयासों से हमारी लोकतांत्रिक संस्थाएं समृद्ध हुई हैं।

- साथियो, हम आजादी के 75वें वर्ष को अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं। इन 75 वर्षों की गौरवशाली यात्रा में हमारा लोकतंत्र सशक्त हुआ है, मजबूत हुआ है और हमने लोकतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से देश और प्रदेश के विकास और जनता के व्यापक कल्याण के लिए अपने संवैधानिक दायित्वों को निभाया है। इन्हीं विधान मंडलों में चर्चा, संवाद, विचार मंथन से हम लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाए हैं। इसमें हमारे विधान मंडलों की प्रमुख भूमिका रही है।

- इन लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति जनता का विश्वास एवं भरोसा और अधिक बढ़े, इसके लिए हमें सामूहिकता के साथ मिलकर इन सदनों की मर्यादाओं व परम्पराओं को और मजबूत करना होगा।

- लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा शासन होता है। लोकतंत्र ही शासन चलाने की सर्वश्रेष्ठ पद्धति है। इसके द्वारा हम जनता की समस्याओं, कठिनाइयों, उनके अभावों को सदन के माध्यम से सरकार तक पहुंचाते हैं ताकि सरकार उनकी समस्याओं एवं अभावों को दूर करे।

- विधान मंडलों के माध्यम से हम सरकार की जवाबदेही तय करते हैं और शासन में पारदर्शिता लाते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि हम इन संस्थाओं को रचनात्मक चर्चा और संवाद का एक केन्द्र बनाएं ताकि इन चर्चाओं और संवाद के माध्यम से हम एक अपेक्षित परिणाम प्राप्त कर सकें।

- हमारे देश में बहुदलीय राजनीतिक व्यवस्था है। सत्ताएं आती हैं, जाती हैं, दलों की सत्ताएं परिवर्तित होती रहती हैं।

- यह पक्ष-विपक्ष की सामूहिक जिम्मेदारी है कि जहां शासन जनकल्याण की योजनाएं बनाए, विकास की योजनाएं बनाए, वहीं प्रतिपक्ष शासन की जवाबदेही तय करे और प्रशासन में पारदर्शिता लाने की भूमिका निभाए। लोकतंत्र में प्रतिपक्ष जितना मजबूत होगा, सशक्त होगा, मुद्दों पर जितनी अधिक चर्चा करेगा, शासन उतनी ही जवाबदेही के साथ काम करेगा। एक सशक्त लोकतंत्र के निर्माण के लिए जिम्मेदार प्रतिपक्ष अनिवार्य है।

- विधान मंडलों का काम कानून बनाने का भी है। कानून बनाते समय सदनों में व्यापक चर्चा हो, संवाद हो। जिस जनता के लिए कानून बनाया जाता है, उनसे व्यापक स्तर पर परामर्श हो, जनप्रतिनिधि उनका दृष्टिकोण भी सदन में रखें।

- कानून बनाते समय उसके प्रभाव का आकलन भी हमें करना चाहिए ताकि कानून सकारात्मक बने और उससे जनता का कल्याण हो।

- मेरा माननीय विधायकों से आग्रह है कि आप केवल एक विधान सभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं बल्कि आप पूरे राज्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। आपको पूरे राज्य की संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए। यहां के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक तथ्यों से आपको अवगत होना चाहिए। हमारे विधायकों का दृष्टिकोण व्यापक होना चाहिए ताकि जब आप विधान सभा में अपनी बात रखें, तो अपने विधान सभा क्षेत्र के साथ साथ राज्य के सर्वांगीण विकास और वहां के सामाजिक आर्थिक परिवर्तन की दिशा तय करने में आपका योगदान हो।

- मंत्रिपरिषद् का सदन के प्रति सामूहिक उत्तरदायित्व होता है। इसलिए माननीय मंत्री महोदय को भी अपने विभागों के साथ साथ सरकार के सभी विभागों की व्यापक जानकारी होनी चाहिए, ताकि जब वे सदन में प्रश्नों का उत्तर दें अथवा चर्चा संवाद का जवाब दें, तो व्यापक और वृहत् दृष्टिकोण से वे अपनी बात सदन में रखें।

- कोई जनप्रतिनिधि, चाहे वे सत्ता पक्ष के हों, या प्रतिपक्ष के हों, यदि सदन में सकारात्मक बात रखते हैं तो आपको दलगत राजनीति से ऊपर उठकर उनके सकारात्मक सुझावों को अमल में लाने का काम करना चाहिए।

- माननीय सदस्यों, आज जब हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, तब सदनों में गिरती हुई मर्यादा, शालीनता और गरिमा हमारे लिए सबसे बड़ी चिंता का विषय है। महामहिम राष्ट्रपति और महामहिम राज्यपाल का अभिभाषण हमारी लोकतांत्रिक संस्थाओं का संवैधानिक दायित्व होता है। मैं कुछ वर्षों से देख रहा हूँ कि उनके अभिभाषणों के दौरान भी व्यवधान उत्पन्न करने, सदनों में गतिरोध पैदा करने तथा अभिभाषण के बहिष्कार की प्रवृत्ति बढ़ रही है। यह हमारा उचित संसदीय आचरण नहीं है। इससे हमारी सदनों की मर्यादाएं कम हो रही हैं। हमें सदन की गरिमा एवं सर्वोच्च परंपराओं का सम्मान करना चाहिए।

- दलों की सत्ताएं परिवर्तित होती रहती हैं। लेकिन सदनों की गरिमा और मर्यादा बनाए रखना सभी दलों का दायित्व है। इसके लिए सभी दलों को बैठकर अपने-अपने विधान मंडलों में व्यापक चर्चा और संवाद करके यह नीतिगत फैसला करना चाहिए कि किस तरीके से हम सदनों की गरिमा और मर्यादा को अक्षुण्ण बनाये रखें। किस प्रकार उच्च कोटि की चर्चा और संवाद हो, ताकि सर्वसम्मति से और सामूहिकता के साथ लोगों की बेहतरी के लिए काम किया जा सके। इस दिशा में हमें काम करने की आवश्यकता है।

- लेकिन आजकल मैं देख रहा हूँ कि नियोजित तरीके से सदनों में व्यवधान किया जाता है, गतिरोध उत्पन्न किया जाता है, नारेबाजी की जाती है, तख्तियां दिखाई जाती है। सदनों में ऐसे नियोजित गतिरोध हमारी संसदीय परंपराओं के अनुकूल नहीं हैं।

- साथियो, मैं यह भी आग्रह करूंगा कि हमारे सदस्यों की कार्य क्षमता संवर्धन की दिशा में ठोस प्रयास किए जाएं। उसके लिए माननीय सदस्यों को सदनों की पुरानी डिबेट्स और चर्चाओं का अध्ययन करना चाहिए।

- इससे सदन में वाद-विवाद की गुणवत्ता बढ़ेगी और जनता के बीच एक सकारात्मक संदेश जाएगा।

- आज समय की मांग है कि लोकतांत्रिक संस्थाएं एवं जनप्रतिनिधि अपने कामकाज में सूचना प्रौद्योगिकी के आधुनिक माध्यमों का अधिकतम उपयोग करें और सोशल मीडिया के माध्यम से विधायिका के कामकाज की जानकारी जनता तक भी पहुंचाएं। जनता को जब सदन के कामकाज के विषय में समुचित जानकारी रहेगी, तो लोकतांत्रिक संस्थाओं पर उनका भरोसा और अधिक बढ़ेगा।

- मैं मध्यप्रदेश विधान सभा की सराहना करता हूँ कि आपने पेपरलेस विधान सभा की दिशा में बेहतरीन काम किया है और सूचना प्रौद्योगिकी का अधिकतम उपयोग किया है।

- सूचना प्रौद्योगिकी जनसंपर्क का एक सशक्त माध्यम है। इसके अधिकतम उपयोग से हमारे सदनों की चर्चा को जनता के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाया जा सकता है और उनके अच्छे सुझावों पर सदन में व्यापक चर्चा के माध्यम से उनके सामाजिक आर्थिक जीवन में परिवर्तन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

- मुझे आशा है कि हम सब सामूहिकता के साथ एक स्वस्थ चर्चा संवाद से इस प्रदेश के सर्वांगीण विकास के लिए, यहाँ के लोगों के सामाजिक-आर्थिक कल्याण के लिए और यहां के लोगों के जीवन की बेहतरी के लिए एकजुट होकर काम करेंगे और एक समृद्ध एवं विकसित मध्यप्रदेश के निर्माण का संकल्प पूर्ण करेंगे।

- मैं पुनः एक बार सभी पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि इन पुरस्कारों से समाज में विधायिका द्वारा किए जा रहे रचनात्मक कार्यों के संबंध में व्यापक जागृति आएगी और सभी नागरिकों को राष्ट्र सेवा में संकल्पित होने की प्रेरणा मिलेगी। धन्यवाद।